भारत में एच॰आई॰वी॰ एड्स और संबंधित चुनौतियाँ

डॉ॰ आभा*

संसार में अनेक भयंकर बीमारियाँ है जिससे लोगों की मृत्यु हो जाती है लेकिन एडस भयानक बीमारी के साथ–साथ लाइलाज भी है यदि कोई व्यक्ति इस रोग से ग्रसित हो जाता है तो अन्त में उसकी मृत्यु हो जाती है। एड्स एक ऐसी बीमारी है जो विश्व में खतरे के रूप में फैली हुई है। यदि एच॰आई॰वी॰ एड्स की वर्त्तमान समय में दुनियाँ की प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों में शामिल किया जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष 2018 के अंत तक वैश्विक स्तर पर लगभग 38 मिलियन लोग एच॰आई॰वी॰ से प्रभावित थे। आँकड़ों पर गौर करे तो इसके कारण अब तक दुनियाँ भर में तकरीबन 35 मिलियन लोगों की मृत्यु हो चुकी है। भारत में एच॰आई॰वी॰ एड्स के रोगियों की संख्या कुल जनसंख्या का लगभग 0.26 प्रतिशत (2.1 मिलियन) है।

राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस संक्रमण पर नियंत्रण प्राप्त करने का काफी प्रयास किया गया। इसी का परिणाम है कि वर्ष 2018 में निम्न और मध्य आय वाले देशों के तकरीबन 62 प्रतिशत व्यस्को और लगभग 54 प्रतिशत बच्चों को एच॰आई॰वी॰ एड्स संबंधित स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त हो रही है।

AIDS (Acquired immune Deficiency Syndrome) HIV (Human Immunodeficiency Virus)से होता है जो मानव की प्राकृतिक प्रतिरोधी क्षमता को कमजोर करता है एच॰आई॰वी॰ शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता पर आक्रमण करता है। जिसका काम शरीर को संक्रामक बीमारियों जो कि जीवाणु और विषाणु से उत्पन्न होता है उससे शरीर की रक्षा करना होता है। एच॰आई॰वी॰ रक्त में उपस्थित प्रतिरोधी पदार्थ लसीकाकोशी पर हमला करता है। ये पदार्थ मानव को जीवाणु और विषाणु जनित बीमारियों से बचाते हैं और शरीर की रक्षा करते है। जब एच॰आई॰वी॰ द्वारा आक्रमण करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षय होने लगती है तो इस सुरक्षा कवच के बिना एड्स पीड़ित लोग भयानक बीमारियों क्षय रोग और कैंसर आदि से पीड़ित हो जाते हैं। और शरीर को कई अवसरवादी संक्रमा यानि आम सर्दी, जुकाम प्रदाह इत्यादि घेर लेते है। जब क्षय और कर्क रोग शरीर को घेर लेते हैं तो इसका इलाज करना कठिन हो जाता है और इससे मरीज की मृत्यु भी हो सकती है।

***पूर्व शोध–छात्रा ग्रामीण अध्ययन (ग्रामीण प्रबंधन एवं विकास विभाग) पटना विश्वविद्यालय, पटना**

- एच॰आई॰वी॰ का वायरस मानव शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली में सीडी 4 (CD4) नामक श्वेत रक्त कोशिका (टी सेल्स) पर हमला करता है ये वे कोशिकाएँ होती है जो शरीर की अन्य कोशिकाओं में विसंगतियों और संक्रमण का पता लगाती है।
- शरीर में प्रवेश करने के बाद एच॰आई॰वी॰ की संख्या बढ़ती जाती है और कुछ ही समय में वह CD4 कोशिकाओं को नष्ट कर देता है एवं मानव प्रतिरक्षा प्रणाली को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचाता है। ये बात सर्वविदित है कि जब एक वार ये वायरस शरीर में प्रवेश कर जाता है तो इसे पूर्णतः समाप्त करना काफी कठिन है।
- एच॰आई॰वी॰ से संक्रमित व्यक्ति की CD4 कोशिकाओं में काफी कमी आ जाती है। ज्ञातव्य है कि एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में इन कोशिकाओं की संख्या 500–1600 के बीच होती है परन्तु एच॰आई॰वी॰ के संक्रमित लोगों में CD4 कोशिकाओं की संख्या 200 से भी नीचे गिर जाती है तो कोशिकाओं की मध्यस्थता से होने वाली प्रतिरक्षा समाप्त हो जाती है और शरीर के अवसरवादी संक्रमण से ग्रस्त होने की संभावना बढ़ने लगती है।

एच॰आई॰वी॰ के प्रकार

एच॰आई॰वी॰ की दो प्रजातियाँ ज्ञात है HIV-1और HIV-2

- HIV-1को विश्व भर में अधिकांश संक्रमणों का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रमुख प्रकार माना जाता है।
- HIV-2के रोगियो की संख्या काफी है और यह मुख्यतः पश्चिम और मध्य अफ्रीकी क्षेत्रों में पाया जाता है।
- स्पष्ट है कि इन दोनों ही प्रकार के HIV से AIDS हो सकता है परन्तु HIV-1की तुलना में HIV-2का प्रसार काफी कठिन है।

एडस के लक्षण –एच॰आई॰वी॰ से संक्रमित लोगों में अक्सर लम्बे समय तक एडस के कोई लक्षण नहीं दिखाई देते है। अधिकांश एडस के मरीज को बुखार या जुकाम हो जाता है परन्तु इससे यह स्पष्ट नहीं होता है कि मरीज को एड्स हुआ है। एड्स के कुछ प्रारंभिक लक्षण इस प्रकार है।

- बुखार, सिरदर्द, थकान, हैजा, लसीकाओ में सूजन।

उपरोक्त लक्षण सामान्य रोग या अन्य साधारण बुखार के भी हो सकते हैं। अतः एड्स का निश्चित रूप से पहचान केवल और केवल औषधीय परीक्षण से ही किया जा सकता है।

एच॰आई॰वी॰ संक्रमण के तीन प्रमुख चरण है।

- तीव्र संक्रमण
- नैदानिक विलंवता
- एड्स

एच॰आई॰वी॰ का प्रसार– एच॰आई॰वी॰ संक्रमित व्यक्ति के शरीर के अन्दर काफी मात्रा में रक्त, वीर्य और योनि स्त्राव पाया जाता है। हालाँकि इसके पसीने, लार, मूत्र और माँ के दूध में होने के प्रमाण भी मिले है। लेकिन इसमें इसकी मात्रा नाम मात्र की होती है। एच॰आई॰वी॰ निम्नलिखित के माध्यम से पफैलता है।

- असुरक्षित संभोग विसंक्रमित न की गई सुइयाँ, सिरिंजे और शरीर में चुभाने की अन्य चीजे।
- संक्रमित खून चढ़ाना या रक्त उत्पादों उत्तको या अंगों को स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में ट्रान्सप्लांट करना।
- गर्भाशय या जन्म के समय माँ द्वारा बच्चे को संचरण।

एच॰आई॰वी॰ संक्रमण सबसे ज्यादा संक्रमित व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करने से फैलता है। दुनियाँ भर में एच॰आई॰वी॰ प्रसार के मामलों के सबसे अधिक मामले विपरीत लिंग के लोगों के बीच यौन सम्बन्ध के माध्यम से होता है। हालाँकि एच॰आई॰वी॰ का प्रसार भिन्न–भिन्न देशों में भिन्न–भिन्न तरीकों से हुआ है। संयुक्त राज्य अमेरिका में 2009 तक सबसे अधिक एच॰आई॰वी॰ का प्रसार उन समलैगिक पुरुषों में हुआ जो कि सभी नए मामलों की 64" आबादी के बराबर थी। असुरक्षित विषमलिंगी यौन संबंधों के मामले में अनुमानतः प्रत्येक यौन सम्बन्ध में एच॰आई॰वी॰ संक्रमण का जोखिम कम आय वाले देशों में उच्च आय वाले देशों की तुलना में चार से दस गुणा ज्यादा होता है।

एच॰आई॰वी॰ संक्रमण का दूसरा सबसे बड़ा स्त्रोत रक्त के द्वारा होता है। रक्त के द्वारा संक्रमण नसीली दवाओं के सेवन के दौरान सुईयों के साझा प्रयोग के द्वारा दूषित रक्त या रक्त उत्पाद के माध्यम से होता है। दवा के इंजेक्शन आपस में बांट कर लगाने से इसके फैलने का जोखिम औसतन 8" होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में 2009 में 12" मामले ऐसे लोगों के आए है जो कि नसों में नशीली दवाओं का उपयोग करते थे। कुछ क्षेत्रों में नशीली दवाओं का सेवन करने वालो में से 80" से ज्यादा लोग एच॰आई॰वी॰ पोजिटिव मिले। विकसित देशों में संक्रमित रक्त से एच॰आई॰वी॰ प्रसार का जोखिम बहुत ही कम है क्योंकि वह रक्त देने वाले व्यक्ति की एच॰आई॰वी॰ जाँच उसका रक्त लेने के पहले की जाती है। लेकिन कम आय वाले देशों में रक्त का इस्तेमाल करने के पहले केवल आधे रक्त की उचित रूप से जाँच होती है। 2008 की रिपोर्ट के अनुसार इन क्षेत्रों में 15" एच॰आई॰वी॰ संक्रमण का आधार रक्त उत्पादों से होता है जो कि वैश्विक संक्रमण का 5&10" है। सहारा से लगे अफ्रिकी देशों में एच॰आई॰वी॰ के प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका असुरक्षित चिकित्सा सुइयाँ निभाते है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमान के अनुसार चिकित्सा सुइयों के द्वारा एच॰आई॰वी॰ संक्रमण का जोखिम अफ्रिका में 1-2" मामलों में होता है।

माँ से बच्चे में एच॰आई॰वी॰ संक्रमण–एच॰आई॰वी॰ माँ से बच्चे को गर्भावस्था के दौरान प्रसव के दौरान और स्तनपान के दौरान प्रेषित हो सकता है। एच॰आई॰वी॰ दुनियाँ भर में फैलने का यह तीसरा आम कारण है इलाज के अभाव में 20" तक होता है तथा स्तनपान के द्वारा ये जोखिम 35" तक होता है। वर्ष 2008 तक बच्चों में एच॰आई॰वी॰ का संक्रमण 90" मामलों में माँ के द्वारा हुआ। लेकिन उचित उपचार के द्वारा माँ से बच्चे को होने वाले संक्रमण की जोखिम को 90" से 1" तक लाया जा सकता है। माँ की गर्भावस्था व प्रसव के दौरान एंटीरेट्रीवायरल दवा दे कर ऑपरेशन द्वार प्रसव करके नवजात शिशु को स्तनपान न करा कर बल्कि उसको एंटीरेट्रोवायरल औषधियों के खुराक देकर माँ से बच्चे में एच॰आई॰वी॰ के संक्रमण को रोका जा सकता है।

एड्स से बचाव कैसे हो

- यौन सम्बन्ध के समय कंडोम का सदैव प्रयोग करें।
- अपने जीवन साथी के प्रति वफादर रहें तथा एक से अधिक व्यक्ति से यौन सम्बन्ध न रखें।
- यदि आप एच॰आई॰वी॰ संक्रमित या एड्स ग्रसित हैं तो रक्त दान कभी ना करें।
- रक्त ग्रहण करने से पूर्व रक्त का एच॰आई॰वी॰ परीक्षण कराने पर जोर दें।
- यदि किसी व्यक्ति को एच॰आई॰वी॰ संक्रमण होने का संदेह हो तो वे तुरन्त अपनी जाँच करा लें। अक्सर एच॰आई॰वी॰ से संक्रमित होने के 3–6 महीने बाद HIV परीक्षण द्वारा ये पता नहीं चल पाता है कि व्यक्ति संक्रमित है या नहीं इसलिए 3–6 महीने के बाद भी एच॰आई॰वी॰ परीक्षण अवश्य करवाए।
- इलाज
- एंटीरेट्रोवायरल थेरेपी
- मौजुदा समय में HIV-AIDS का पूर्ण इलाज संभव नहीं है हालाँकि कई अलग–अलग दवाओं के माध्यम से इसके वायरस की नियंत्रित किया जा सकता है इस तरह के उपचार को एंटीरेट्रोवायरल थेरेपी कहा जाता है।

यह दैनिक दवाओं का एक संयोजन है जो वायरस को प्रजनन करने से रोकता है।

एंटीरेट्रोवायरल थेरेपी CD4 कोशिकाओं की रक्षा करने में मदद करती है जिससे रोग से लड़ने के लिये प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है। साथ ही HIVके प्रसार को रोकने में भी मददगार है।

स्टेम सेल ट्रांसप्लांट

- स्टेम सेल ट्रांसप्लांट के तहत अस्वस्थ कोशिकाओं को स्वास्थ्य कोशिकाओं के साथ बदलने का प्रयास किया जाता है।

  इस पद्धति का उपयोग करने वाले विशेषज्ञों द्वारा अब तक केवल दो लोगों को HIV से मुक्ति दिलाई गई है।

शोधकर्त्ताओं का मानना है कि यह तरीका बहुत जटिल, महँगा और जोखिमपूर्ण है।

वैश्विक स्तर पर HIV AIDS - इस महामारी की शुरूआत के बाद से अब तक लगभग 70 मिलियन से अधिक लोग HIVवायरस से संक्रमित हो गए है और इसके कारण लगभग 35 मिलियन लोगों की मृत्यु हो गई है।

- HIV निरोधक सेवाएँ न मिलने के कारण वर्ष 2018 में लगभग 770.000 लोगों की मृत्यु ही गई और लगभग 1.7 मिलियन लोग संक्रमित हुए।
- HIVएड्स से अफ्रीकी क्षेत्रा सबसे अधिक प्रभावित है। और वहाँ प्रत्येक 25 में से एक व्यस्क HIVसे संक्रमित है।
- हालाँकि बीते कुछ वर्षों में इस संदर्भ में किए गए प्रयासों के कारण वैश्विक स्तर पर HIV AIDS से लड़ने में कापफी मदद मिली है और HIVसंक्रमण को वर्ष 2000 से वर्ष 2018 के बीच 37" तक कम किया जा सका है।
- एंटी रेट्रोवायरल थेरेपी (ART) के कारण 13.6 मिलियन लोगों की जान बचाई जा सकी है और साथ ही HIV से संबंधित मृत्यु के आँकड़ों में 45 प्रतिशत की गिरावट आई है।
- बीते कुछ समय में इस संबंध में कुछ प्रभावी दवाओं की खोज भी की गई है।
- UNAIDS की हालिया रिपोर्ट के अनुसार HIV से प्रभावित लगभग 38 मिलियन में से 24 मिलियन लोग ART प्राप्त कर रहे है जो 9 वर्ष पूर्व मात्रा 7 मिलियन थे।

भारत में एच॰आई॰वी॰ एडस–एच॰आई॰वी॰ एडस के संदर्भ में भारत की रिपोर्ट काफी सकारात्मक है। परन्तु फिर भी देश में निरंतर सतर्कता और प्रतिबद्ध कारवाई की आवश्यकता है।

भारत में एच॰आई॰वी॰ का पहला मामला वर्ष 1986 में सामने आया था। इसके बाद यह वायरस पूरे देश में तेजी से फैला और 135 अन्य मामले सामने आए जिनमे से 14 पहले से ही एड्स से प्रभावित हो चुके थे।

वर्तमान समय में प्रत्येक 10.000 व्यक्तियों में से 22 व्यक्ति एच॰आई॰वी॰ से संक्रमित है जबकि 2001–03 के बीच यह संख्या 38 के आस–पास थी।

भारत में तकरीबन 21.40 लाख लोग एच॰आई॰वी॰ एडस से संक्रमित है और देश में हर साल एच॰आई॰वी॰ संक्रमण के तकरीबन 87000 केस आते है। साथ ही देश में एड्स के कारण सलाना 69000 लोगों की मृत्यु होती है।

- एच॰आई॰वी॰ एड्स से प्रभावित कुल लोगों में 8.79 लाख महिलाएँ हैं।
- मिजोरम में एच॰आई॰वी॰ से संक्रमित लोगों की संख्या सबसे अधिक है यहाँ प्रत्येक 10.000 व्यक्ति पर 204 व्यक्ति एच॰आई॰वी॰ से संक्रमित है।

रोक थाम के प्रयास

राष्ट्रीय एडस नियंत्रण कार्यक्रम (NACP)-वर्ष 1986 में HIV संक्रमण के पहले मामले की रिपोर्ट के कुछ समय पश्चात ही भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय एडस नियंत्रण कार्यक्रम (NACP) की स्थापना किया था जो अब स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्राालय के तहत एडस विभाग वन गया है।

UNAIDS-UNAIDS नए HIV संक्रमणों की रोकने की दिशा में कार्य कर रहा है। इसके अलावा UNAIDS ये भी सुनिश्चित करता है कि HIV से संक्रमित सभी लोगों की HIV उपचार तक पहुँच प्राप्त हो। UNAIDS यह सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य कर रहा है कि वर्ष 2020 तक लगभग 30 मिलियन लोगों को इलाज की सुविधा प्राप्त हो सके। इस कार्य हेतु UNAIDS द्वारा एक लक्षण निर्धारित किया गया है। इस लक्ष्य के अनुसार वर्ष 2030 तक यह सुनिश्चित किया जाना है कि 90 प्रतिशत लोग अपनी HIV स्थिति जान सके। HIV पॉजिटव होने वाले 90 प्रतिशत लोगों तक स्वास्थ्य सुविधएँ पहुँच सके और इलाज तक पहुँच प्राप्त करने वाले 90" लोगों को वायरस के दवाब को कम किया जा सके।

SDG 3.3

- वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों द्वारा अपनाए गए सतत विकास लक्ष्यों (SDG) में भी वर्ष 2030 तक एडस, तपेदिक और मलेरिया महामारी को समाप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

एच॰आई॰वी॰ और एडस रोकथाम नियंत्राण अधिनियम 2017

- सितम्बर 2018 से लागू यह कानून देश में HIV और AIDS के प्रसार को रोकने और नियंत्रित करने का प्रयास करता है। साथ ही यह अधिनियम HIV और AIDS से संक्रमित व्यक्तियों के खिलाफ भेद भाव को समाप्त करने का कार्य भी करता है। इस अधिनियम में ऐसे व्यक्तियों के उपचार के संबंध में गोपनीयता प्रदान करने का भी प्रावधान किया गया है। इसमें HIV और AIDS से संबंधित शिकायतो के निवारण तंत्र का भी प्रावधन है।

चुनौतियाँ– AIDS के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में पिछले 20 वर्षों में काफी सफलता हासिल की गई है परन्तु हाल ही के कुछ वर्षों में यह प्रगति धीमी होती दिखाई दे रही है।

- आँकड़ों के अनुसार 2018 के अंत तक HIV से संक्रमित सभी व्यक्तियों में से 79 प्रतिशत को ही इस तथ्य के बारे में पता था तथा 62 प्रतिशत ही उपचार सेवाएँ पहुँच पाई थी और केवल 53 प्रतिशत संक्रमित लोगों को वायरस के दबाव को कम किया जा सका था। ऐसे 90–90–90 लक्ष्यों की प्राप्ति मुश्किल दिखाई दे रही है।
- अध्ययन के अनुसार विश्व में केवल 19 देश ऐसे है जो वर्ष 2030 तक एडस, तपेदिक और मलेरिया महामारियों को समाप्त करने के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है।

- भारत में हम आज भी एच॰आई॰वी॰ एड्स से जुड़े सामाजिक भेद–भाव को समाप्त नहीं कर पाए हैं।
- अब तक एच॰आई॰वी॰ एड्स को सार्वजनिक स्वास्थ्य गतिविधियों की मुख्य धारा में एकीकृत नहीं किया जा सका है।

निष्कर्ष –भारतीय समाज में HIV AIDS से जुड़ी मानसिकता को बदलना शायद नीति निर्माताओं के समक्ष मौजुदा सबसे बड़ी चुनौती है और इसे जल्द से जल्द निपटा जाना भी आवश्यक है। संक्रमण के रोकथाम और नियंत्रण के साथ–साथ संक्रमित व्यक्ति की देखभाल और उसे अभिप्रेरित करने पर जोर दिया जाना चाहिए।

वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2000–2018 में HIV संक्रमण की दर को 37" तक कम किया जा सका है। HIV संक्रमण की दर को कम करने के लिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण कदम उठाए गए।

संदर्भ सूची

(1) बीस आर.ए (मई 1993) ''एच॰आई॰वी॰ एडस का कारण कैसे बनता है?'' विज्ञान, 260 (5112): 1273–91.

(2) डॉक डीसी, रोएडटरर एम, कोप आर ए (2009)। ''इमर्जिग कान्सेप्टस इन इम्युनोपथोजेनेसिस ऑफ एडस'' चिकित्सा की वार्षिक समीक्षा। 60:471–841.

(3) रॉजर, एलिसन जे; कैबियानो, बैलेन्टिना; ब्रून, टीना; वर्जाजा, पिएत्रो; कोलिन्स, साइमन; डेगेन, आलोफ; और अन्य (2019).

(4) हैन, रॉबर्ट ए; इनहॉर्न, मार्सिया क्लेयर एड। (2009)। नृविज्ञान और सार्वजनिक स्वास्थ्यः संस्कृति और समाज में अन्तर को कम करना (दूसरा संस्करण)। आक्सफोर्डः आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पी। 449.

(5) ''एच॰आई॰वी॰ से पीड़ित मदर–टू–चाइल्ड ट्रांसमिशन'' एच॰आई॰वी॰ गवर्नमेंट। 15 मई, 2017।

(6) इंटरनेशनल कमिटी ऑन टैल्ससोनॉमी ऑफ वाइरस (2002)। ''61.0.61 लेंटवायरस'' राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान। 28 फरवरी 2006 को लिया गया।

(7) नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ (17 जून, 1998)। ''प्रमुख एच॰आई॰वी॰ प्रोटीन की क्रिस्टल संरचना नई रोकथाम। उपचार के लक्ष्यों को प्रकट करती है'' (प्रेस विज्ञप्ति)। 19 पफरवरी 2006 को मूल संग्रहीत से 14 सितम्बर 2006 को लिया गया।

(8) यूएनएडस, डब्ल्यूएचओ (दिसम्बर 2007)। ''2007 एडस महामारी अद्यतन'' (पीडीएफ)। पी। 10.22 नवंबर, 2008 को मूल (पीडीएफ) से संग्रहीत। 12 मार्च 2008 को लिया गया।

(9) स्मिथ जेए, डैनियल आर (2006), ''वायरस के पथ के वादः रेट्रोवायरस

द्वारा मेजवान डीएनए की मरम्मत तंत्र का शोषण''। ACS रासायनिक जीव विज्ञान। 7 (4): 217–216.

(10) पावेल एमके, बेनकोवा के, सेलिंगर पी, डोगोसी एम, किंकरोरो लकाकोव मैं, कौटनिकोकोव एच, लातिकोवका जे, राउविकोव ए, स्परकोवा जेड, लैकोलोवा एल, ईस वी, acH जे, हेचवर्ग, हेवर्गवर्ग ।

****